अध्याय–12
राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला

पारम्परिक रूप से राजस्थान मंदिरों की भित्तियों पर सृजित मूर्तियों की उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। देलवाड़ा, रणकपुर, नाकोड़ा, जगत शिरोमणि आदि मंदिरों की मूर्तियां इसका उदाहरण है। जयपुर का मूर्ति मोहल्ला किसी परिचय का मोहताज नहीं है। यहाँ के मूर्तिकारों के हाथों में पत्थर मनचाहे आकार में ढलता जाता है। मूर्ति मोहल्ले के मूर्तिकार पूर्णतः व्यावसायिक मूर्तियां बनाते हैं। देवी देवताओं की जीवंत मूर्तियां पूरे विश्व में यहीं से आपूर्ति होती हैं। आजीविका के लिए इन मूर्तिकारों की प्रतिभा व मौलिक सर्जना कहीं दब सी गयी है फिर भी कहीं–कहीं कला के नवांकुर यहाँ भी प्रस्फुटित होते रहे हैं। जिन में से कुछ पेड़ बने तो कुछ शैशवावस्था में ही मूर्झा कर जीवन संघर्ष की धूप में जल गये। पारपंरिक मूर्तिकला के बीच आधुनिकता के स्वर गुंजायमान करने वाले मूर्तिकार राजस्थान में अधिक नहीं हैं। उस्ताद मालीराम शर्मा ने यथार्थवादी मूर्तियों के माध्यम से राजस्थान की मूर्तिकला में नवीन विचार प्रस्तुत किया था। उनकी बनाई मूर्तियां यूरोपीय शास्त्रीय शिल्पों के समकक्ष मानी जाती है। उन्हे राजस्थान का माईकल एंजिलो कहते हैं।मालीराम जी ने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में मूर्तिकारों की नयी खेप संवारने में महत्ती भूमिका निभाई। बंगाल मूल के तारापदो मित्रा (टी.पी. मित्रा) ने भी स्कूल ऑफ आर्ट्स में कला विद्यार्थियों को मिट्टी से मॉडलिंग का प्रशिक्षण देकर उन्हें पोर्ट्रेट बनाने में दक्ष किया। इनके अनेक शिष्यों ने राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। कलाविद् गोपीचंद मिश्रा ने पारपंरिक यथार्थवादी तथा महेन्द्र कुमार दास ने व्यक्ति मूर्तन के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में राजस्थानी मूर्तिकारों ने पत्थर के अलावा अन्य माध्यमों पर भी अपने हाथ आजमाये। प्लास्टर, लकड़ी व धातु की मूर्तियां भी आकार लेने लगी। नारायण लाल जैमिनी, अय्याज़ मोहम्मद, आनन्दी लाल वर्मा, बृजमोहन शर्मा, सोहनलाल खत्री आदि ने अपने रचनाकर्म से राजस्थान की मूर्तिकला को समृद्ध किया। 1960–65 के बाद राजस्थान की मूर्तिकला में प्रयोगवाद दिखाई देता है। हरिदत्त गुप्ता के काष्ठशिल्प, ऊषा रानी हूजा के सीमेंट शिल्प उल्लेखनीय है। विविध कला संस्थानों में मूर्तिकला विभागों का संचालन भी नव प्रयोगों व नव सर्जना के लिए मार्गदर्शक बना। ऊषा रानी हूजा, गोपीचन्द मिश्रा, अर्जुन प्रजापति आदि राजस्थान की कला के आधुनिक स्वरूप को गढ़ने वालों में सुपरिचित नाम हैं।

स्व. गोपीचन्द मिश्रा :–

कलाविद् गोपीचन्द मिश्रा राजस्थान की मूर्तिकला को नई दिशा व पहचान दिलाने वाले मूर्तिकार थे। 13 नवम्बर 1907 को इनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ संगमरमर पर छैनी–हथोड़े का संगीत गूंजता था। अपने नाना से कला के गुर सीखे और पत्थरों को प्राणवान बनाने में पूरा जीवन लगा दिया। कुछ महीने हरिद्वार में रहकर अपनी प्रतिभा से लोगों को चमत्कृत करने वाले गोपीचन्द जी ने अपनी वास्तविक कर्मस्थली जयपुर को ही बनाया तथा नोका विहार, शिवताण्डव आदि गतिपूर्ण मूर्तियों के निर्माण से अपनी विशिष्ठ पहचान बनाई। धार्मिक मूर्तियों के साथ–साथ अपने अन्तर्मन के भावों को भी मूर्तरूप देने में आप अग्रणी रहे। 'मां और शिशु' की वात्सल्यमय मूर्ति इसका प्रमाण है। यह मूर्ति मां की ममता और बालक की चंचलता का अद्भूत प्रदर्शन करती है (चित्र सं. 1)। इस कृति को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। 'शिव शक्ति' शीर्षक से बनाई मूर्ति में शिव का

चित्र संख्या 1मां व शिशु

अनोखा स्वरूप प्रदर्शित हुआ है। इस कृति में शारीरिक सौष्ठव, लावण्य एवं गति का सुन्दर समन्वय है। ''यह बोझ नहीं मेरा भाई है'' नामक कलाकृति दो भाईयों के प्रेम माधुर्य का सुन्दर प्रस्तुतिकरण है। इस मूर्ति में विद्यालय से घर लौटते दो भाइयों को बनाया गया है जिसमें बड़ा भाई अपने छोटे भाई को पीठ पर बैठाकर स्नेहपूर्वक ला रहा है।

यह कृति भी राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत हुई। ग्रामीण वृद्ध व्यक्ति की मूर्ति भी मानव शरीर की नश्वरता के प्रति सावचेती का उदाहरण है। इनके अलावा अनेक मूर्तियां संगरमरमर, बालुए पत्थर (सैण्ड स्टोन) मिट्टी पलास्टर आदि में आप द्वारा सृजित की गई। मूर्तिकला के जो संस्कार आपको विरासत में मिले उन्हें सहेजते हुए आपने अगली पीढ़ी को सौंपा है।

मूर्तिकला को बढ़ावा देने के निमित्त आपने 'सनातन धर्म मूर्ति आर्ट' संस्थान की स्थापना की।

कला सेवा के लिए राजस्थान ललित कला अकादमी ने आपको 'कलाविद्' की उपाधि से अलंकृत किया। 4 मार्च 1989 को आपने इस नश्वर संसार को हमेशा के लिए त्याग दिया लेकिन जीवन संध्या तक रची उनकी सृजना पीढ़ियों तक उनका स्मरण कराती रहेंगी।

चित्र संख्या 2 ऊषा रानी हूजा का एक शिल्प

ऊषा रानी हूजा– (1923–2016ई.)

18 मई 1923 को दिल्ली में जन्मी ऊषा रानी हूजा भारत की आधुनिक मूर्तिकला क्षेत्र का सुपरिचित नाम है। इन्होंने मूर्तिकला की विधिवत शिक्षा लंदन के रिजेन्ट स्ट्रीट पोलिटेक्नीक कॉलेज से ली। 1959ई. में इन्होंने जयपुर को अपनी कर्मस्थली बनाया। इन्होंने शुरू से ही कठोर व श्रमसाध्य मूर्तियां बनाने में रूचि ली। बड़े आकार की सीमेन्ट मूर्तियां इनकी पहचान है। लंदन में शिक्षा ग्रहण करने के समय इन पर यूरोपीय मूर्तिकारों का विशेषतः हेनरी मूर, एक्टिन मूलॉल आदि का प्रभाव पड़ा लेकिन वह अपनी कला की बुनियाद प्रेरणा मानवीय गतिविधियों को मानती थी। इनके विषय श्रमिक, खिलाड़ी, नृतक, कृषक आदि रहे हैं। इनके मूर्तिशिल्प भारत व भारत के बाहर अनेक महत्वपूर्ण स्थानों पर प्रदर्शित हैं। जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल, रवीन्द्र रंगमंच, दुर्लभ जी अस्पताल, शहीद स्मारक आदि स्थानों पर बने विशाल शिल्प इनकी कठोर कला साधना को दर्शाते हैं। इन्होंने धातु के अनुपयोगी टुकड़ों को सुन्दर मूर्तरूप देने का अभिनव प्रयोग किया। ऊषा रानी के शिल्पों में अनावश्यक अलंकरण नहीं है बल्कि सीधे–सीधे खुरदरी सतह के साथ विषय का रूपांकन किया गया है। रिसर्च स्कॉलर (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली), माइनर्स मॉन्यूमेन्ट (कोटा) श्रमिक (उदयपुर),

चित्र संख्या 3 बणी–ठणी

घूमर (जोधुपर) आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ है(चित्र सं. 2)। समीक्षक हेमन्त शेष ने उनकी कला पर टिप्पणी करते हुए लिखा है ''इनके अधिकांश शिल्प जीवन की गति व लय की अभिव्यक्ति हैं।'' 22 मई 2016 को इनका निधन हो गया।

पद्मश्री अर्जुनलाल प्रजापति – (1957ई.)

राजस्थान की मूर्तिकला के क्षेत्र में पद्मश्री अर्जुन प्रजापति ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। इनका जन्म 9 अप्रैल 1957 को हुआ। बाल्यकाल से ही कला के प्रति इनका रूझान था। गुंथी हुई मिट्टी को विविध आकार देकर इन्होंने अपने भीतर की कला को मूर्त रूप दिया। इनकी नैसर्गिक प्रतिभा को कलागुरू स्वर्गीय महेन्द्रदास, द्वारकाप्रसाद शर्मा और आनन्दी लाल वर्मा ने निखारा। स्वयं अर्जुन प्रजापति भी अपनी हर उपलब्धि को अपने कलागुरूओं का आशीर्वाद मानते हैं। इनका मानना है कि मूर्ति बनाना श्रमसाध्य कला है। यह कठोर तप है जो अन्ततः ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है। अर्जुन प्रजापति की यह साधना इनके मूर्तिशिल्पों में प्रत्यक्ष अनुभव की जा सकती है। यथार्थ जीवन की कठिनाइयों के बीच अपने विषय तलाशना और उन्हें जीवन्त स्वरूप देना इनकी विशेषता है। इनके कुशल हाथों में पत्थर भी मोम की तरह मुलायम बन जाता है। इनकी बनाई बणी–ठणी की मूर्ति जगप्रसिद्ध है (चित्र सं 3)। संगमरमर के इस शिल्प में वस्त्रों की सिलवटें और घूंघट की पारदर्शीता दर्शनीय है। देश–विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों में इनकी मूर्तियां सज्जित हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी से राज्य पुरस्कार, राष्ट्रीय कालीदास पुरस्कार, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन अवार्ड, नेशनल अवार्ड सहित अनेक पुरस्कारों से आपको नवाजा गया है। भारत सरकार ने सन् 2010 में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है। अर्जुन प्रजापति मूर्तिकला की नयी पौध तैयार करने के लिए भी सतत् प्रयासरत रहे हैं। इनका ''माटी मानस संस्थान'' स्थापित करना इस क्षेत्र की उल्लेखनीय पहल है। बणी–ठणी, गाय–बछड़ा, लेडी विद रोज़, राजस्थानी स्त्री, दुर्गा आदि इनके प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प हैं।

राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला –

चित्रकला की अपेक्षा मूर्तिकला में प्रयोगवाद का प्रवेश अपेक्षाकृत देर से व धीरे हुआ है। राजस्थान की मूर्तिकला मूलतः पारम्परिक व धार्मिक विषयों तक सीमित रही। धीरे–धीरे मूर्तिकारो ने यथार्थ आकारों के साथ विषयगत परिवर्तन किये। जीवन को केन्द्र मानकर मूर्तियों का सृजन किया। विविध माध्यमों का प्रयोग और विश्व कला के नवप्रभावों से राजस्थान में मूर्तिकला के नये दौर का आरंभ होता है। 1965 के बाद प्रयोगवाद ने गति पकड़ी। कलाकारों के विविध समूहों व कला संस्थानों ने वातावरण निर्माण में महत्ती भूमिका निभाई। राजेन्द्र मिश्रा, ज्ञानसिंह, नरेश भारद्वाज, हर्ष छाजेड़, पंकज गहलोत, अशोक गौड़ आदि मूर्तिकार 80 के दशक के बाद महत्वपूर्ण है। इनके काम में पारपंरिक के स्थान पर नवीन कला चेतना और अमूर्त अब्स्ट्रेक्ट आकार दिखाई देते हैं।

गणना की दृष्टि से राजस्थान के समकालीन मूर्तिकार कम हैं लेकिन मूर्ति जैसे श्रमसाध्य माध्यम के साथ काम करने वाले राजस्थानी कलाकारों की कला देश–विदेश के ख्यातनाम कलाकारों से किसी भी दृष्टि में कम नहीं है। ज्ञानसिंह के मूर्तिशिल्पों में संगमरमर पिघलते मोम की तरह दिखता है। वहीं पंकज गहलोत ने काले पत्थरों को अपने हाथों से तराश कर हीरे जैसा मूल्यवान बना दिया है। पंकज महानगर की चमक दमक से सुदूर प्रकृति के आंचल में अपने सृजन में आनंदित हैं इनकी मूर्तियों में प्रकृति और मानव का सुन्दर समन्वय है। (चित्र सं. 4)।

चित्र संख्या 4 युगल(पंकज गहलोत)

चित्र संख्या 5 अंकित पटेल का एक शिल्प

अंकित पटेल ने काष्ठ प्रतिमाओं से अपनी यात्रा शुरू की जिसे विशाल धातु के कायनैटिक स्कल्पचर बनाने की ऊंचाई तक ले आये हैं। जीवन के अनुभवों का सार इनके शिल्पों में दिखता है (चित्र सं. 5)।

मूर्तिकारों की इस पीढ़ी में भूपेश कावड़िया एक ऊर्जावान सृजक हैं जिनके काम में निरन्तरता दिखाई देती है। पत्थर और लकड़ी के कलात्मक संयोग से स्त्री देह के विविध आयामों को जीवन्त कर देने की क्षमता इनके काम में दिखती है

चित्र संख्या 6 भूपेश कावड़िया का एक शिल्प

(चित्र सं. 6)। अशोक गौड़ के शिल्पों में गति और ठहराव का सामंजस्य दिखता है। राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला में अनेक युवा चेहरें है जो अपने अंतस के कलाकार की छटपटाहट को पत्थर, लकड़ी धातु, फाईबर जैसे माध्यमों से प्रकट करना चाहते हैं।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट और अन्य कला संस्थानों के मूर्तिकला विभाग इन युवाओं को प्रशिक्षण और प्रेरणा देकर उनके संवेदनशील कलाकार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने में महत्ती भूमिका निभा रहे हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान की मूर्तिकला 1960–65 के बाद प्रयोगवाद की ओर अग्रसर हुई।
2. मालीराम शर्मा और टी.पी. मित्रा ने राजस्थान में मूर्तिकला के लिये नवीन वातावरण का सृजन किया।
3. मालीराम शर्मा को राजस्थान का माईकल एंजिलो कहा जाता है।
4. महेन्द्र कुमार दास व्यक्ति मूर्तन के लिये प्रसिद्ध थे।
5. कलाविद् गोपीचंद मिश्रा ने अनेक पारम्परिक व यथार्थ परक मूर्तियां बनाई।
6. ऊषा रानी हूजा राजस्थान की प्रसिद्ध महिला मूर्तिकार थी।

7. अर्जुन लाल प्रजापति ने राजस्थान की मूर्तिकला को नई पहचान दी।

8. राजस्थान के युवा मूर्तिकारों में समकालीन भारतीय कला जगत में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र 1 कायनेटिक स्कल्पचर के लिये किसे जाना जाता है ?

प्र 2 किसके मूर्तिशिल्पों में संगमरमर मोम की तरह दिखता है?

प्र 3 रिसर्च स्कॉलर किसका मूर्तिशिल्प है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र 1 ''बोझ नहीं मेरा भाई है'' किसकी कृति है?

प्र 2 राजस्थान का माईकल एंजिलो किसे कहते है?

प्र 3 राजस्थान से किस मूर्तिकार को पदम्श्री से विभूषित किया गया है?

प्र 4 संगमरमरर की पारम्परिक मूर्तियों के लिए कौनसा शहर प्रसिद्ध है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

प्र 1 राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला पर लेख लिखिए ।

प्र 2 उषा रानी हूजा के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए ।

प्र 3 राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला की विकास यात्रा समझाइये ।

खण्ड – द
प्रायोगिक चित्रकला

प्रायोगिक कार्य

किसी भी कला का सैद्धान्तिक पक्ष नियम, उपनियमों के ज्ञान के लिए आवश्यक होता है परन्तु कला मूलतः अभ्यास का विषय है। बिना सतत् अभ्यास के किसी भी कला को आत्मसात कर उसे मूर्त रूप देना संभव ही नहीं है। पढ़े हुए कला सिद्धातों का प्रयोगिक रूप से अभ्यास करने पर भी कला सर्जना में पारंगत हुआ जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए प्रायोगिक कार्य को दो खंडों में विभक्त करके अध्ययन करना चाहिए। वस्तु चित्रण, दृश्य संयोजन।

वस्तु चित्रण –

सदियों से कलाकारों ने अपने चित्रों के लिए वस्तु चित्रण को विषय के रूप में चुना है। इसके बहुत से कारण रहे हैं। भीतर के विचार को प्रतिबिम्बित करने के लिए प्रकृति की सुन्दरता आत्मसात करने के लिए और अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए, स्थिर जीवन में गति दर्शाने के प्रयास के रूप में कलाकारों ने इसे अपना प्रिय माध्यम बनाया। विश्व के ख्यातनाम कलाकारों ने स्टिल लाईफ या वस्तु चित्रण पर आधारित अपनी मास्टर पीस कृतियां रची हैं। पॉल सेजां, फ्रासिंसको डी जुर्बरान, जॉर्ज ब्रॉक, विन्सेट वॉन गोग आदि की स्टिल लाईफ कृतियां प्रसिद्ध है। विन्सेट वॉन गो की कृति ''सूरजमुखी'' विश्व की कुछेक ख्याति प्राप्त कृतियों में से एक है। हमारे आस–पास के सभी चल–अचल आकार वृत्त, शंकु या घनाकार रूपों को प्रतिबिम्बित करते हैं। वस्तु चित्रण के लिए हमें इन्हीं रूपाकारों को केन्द्र में रखकर वस्तुओं का चयन करना होता है। न्यूनतम तीन वस्तुओं का समूह अध्ययन के

वस्तु चित्र

वस्तु चित्र

वस्तु चित्र

वस्तु चित्र

लिए श्रेष्ठ होता है जिसमें एक वस्तु अनिवार्यतः घनाकार होनी चाहिए। इन वस्तुओं को उनके बड़े–छोटे आकार के अनुसार व्यवस्थित करने चाहिए। पीछे पर्दे का प्रयोग इनकी स्पष्टता और आकर्षण को बढ़ा देता है। किसी एक दिशा से प्रकाश इन पर पड़े तो इनका सौंदर्य द्विगुणित हो जायेगा। चित्रण के लिए सर्वप्रथम पेंसिल द्वारा हल्का रेखांकन करना चाहिए। एच. बी., बी. या 2बी., 4बी., 6बी. पेंसिल का प्रयोग करना चाहिए। वस्तु समूह का भलिभांति निरीक्षण कर उसके स्वरूप को आत्मसात करना चाहिए। चित्रतल (ड्रॉईंग शीट) पर वस्तुओं के आकारानुसार विभाजक रेखाएं बनानी चाहिए। जिसमें संयोजन के सिद्धांतों को दृष्टिगत रखना चाहिए। रंग भरने के लिए जलरंग, टेम्परा या क्रेयॉन का उपयोग करना चाहिए। जलरंग अथवा टेम्परा के लिए ऐसा कागज़ प्रयोग में लिया जाना चाहिए जिसमें पानी को सहन करने की क्षमता हो। कार्ट्रीज पेपर, कैन्ट पेपर अथवा हस्तनिर्मित कागज़ (विशेषतः पूना हैण्डमेड) श्रेष्ठ माने जाते हैं। पानी के सम्पर्क में आने पर ये कागज़ जल्दी खराब नहीं होते। जलरंग में चित्रण करते समय हल्के से गहरे की ओर बढ़ना चाहिए। चूंकि ये पारदर्शी होते हैं इनमें सफेद रंग का प्रयोग नहीं किया जाता है।

हाईलाईट वाले क्षेत्रों रिक्त छोड़ते हुए पहले हल्की रंगतों का प्रयोग करते हुए अंत में गहरी रंगतों से चित्र को पूर्ण करते हैं। जलरंग के प्रयोग में रंगों की शुद्धता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मैले रंगों के प्रयोग से चित्र खराब हो सकता है। जिसे सुधारना संभव नहीं होता।

पारंपरिक रूप से टेम्परा माध्यम बहुत लोकप्रिय रहा है। ये लघुचित्र शैलियों के समय से प्रचलन में है। पहले सूखे रंगों में गोंद या सरेस मिलाकर इन्हें तैयार किया जाता था। लेकिन आजकल पोस्टर कलर के रूप में तैयार मिलते हैं। ये अपारदर्शी होते हैं। इसमें कलाकार स्वअभ्यास के अनुसार रंगतों का प्रयोग करता है। लेकिन हाईलाईट क्षेत्र व अत्यन्त गहरे क्षेत्रों को अन्त में फिनिश किया जाता है। यर्थाथपरक प्रभाव के लिए ये श्रेष्ठ माध्यम है। टेम्परा में प्रायः पूरे चित्रतल को रंगों से भरा जाता है अर्थात पृष्ठभूमि आदि में भी रिक्त स्थान नहीं छोड़ा जाता है। वस्तुचित्रण में छाया–प्रकाश को विशेष महत्व के साथ दर्शाया जाना चाहिए ताकि त्रि–आयामी प्रभाव उत्पन्न किया जा सके। चित्रित की जाने वाली वस्तुओं द्वारा चित्रतल का लगभग 60 प्रतिशत क्षेत्र को घेरा जाना चाहिए। शेष भाग पृष्ठभूमि व अग्रभूमि के लिए छोड़ा जाना चाहिए।

चित्र संयोजन –

इसके लिए अपने आस–पास के जीवन का अध्ययन तथा उनमें से चित्रण विषय खोजने चाहिए जैसे ग्राम्य जीवन, पनघट, यात्रा, प्रतीक्षा, बस–स्टैण्ड, लोक उत्सव, नृत्य, परिश्रम आदि। दृश्य संयोजन के लिए मानवाकृतियों को प्रकृति व अन्य रूपाकारों के साथ संयोजित किया जाना चाहिए। मानवाकृतियों के अंकन के लिए उन्हें यथार्थपरक बनाना आवश्यक नहीं होता बल्कि अपने ज्ञान व सृजनक्षमता से उनका अनुर्कन करना चाहिए। संयोजन में विषय के साथ चित्रतल का प्रयोग रंग और भाव को महत्व दिया जाना चाहिए। तीन मानवाकृतियों के साथ संयोजन का अभ्यास किया जाना चाहिए। इनका आपसी

संतुलन व सामंजस्य (विचार सामंजस्य, आकार सामजंस्य, भाव सामंजस्य) महत्वपूर्ण होता है। श्रेष्ठ संयोजन के लिए विविध प्रयोगों का ज्ञान बड़े चित्रकारों की कृतियों का अध्ययन करने से प्राप्त किया जा सकता है। हमेशा प्रतिकृति बनाने के स्थान पर नवसर्जना करनी चाहिए। चित्र संयोजन में पात्र चित्रण में उसके शील स्वरूप, उसके अंतस की प्रवृत्तियों को भी प्रत्यक्ष करना पड़ता है। उसी प्रकार उसके अंग सौष्ठव को भी प्रत्यक्ष करना पड़ता है। प्रकृति के नाना रूपों के साथ मनुष्यों के हृदय का सामंजस्य दिखाने और प्रतिष्ठित करने के लिए वन, पर्वत, निर्झर आदि अनेक पदार्थों को ऐसी स्पष्टता के साथ अंकित करना पड़ता है कि दर्शक का अंतःकरण उनका पूरा बिम्ब ग्रहण कर सके। दृश्य चित्रण में केवल अर्थ ग्रहण कराना नहीं होता बल्कि भाव ग्रहण कराना भी होता है। यह भाव ग्रहण किसी वस्तु के आकार मात्र से नहीं हो सकता है। आस–पास की अन्य वस्तुओं के बीच उसकी स्थिति व विभिन्न अंगों की संश्लिष्ट योजना के साथ सामंजस्य द्वारा ही संभव होता है। ऐसा आदर्श चित्र संयोजन सतत अभ्यास और सूक्ष्म निरीक्षण से ही संभव होता है। चित्र का प्रथम उद्देश्य सौंदर्य की प्रस्तुति होता है। अतः चित्र बनाते समय हमें उसे आकर्षक व सौंदर्य युक्त बनाने को महत्व देना चाहिए। वस्तु चित्रण और चित्र संयोजन में दक्षता के लिए रेखांकन (स्केचिंग) व त्वरित रेखांकन (रेपिड स्केचिंग) का पेंसिल से सतत अभ्यास करना चाहिए। स्केचिंग से कला विद्यार्थियों को आकारों की बनावट, अनुपात, क्षयवृद्धि व स्थितिजन्य लघुता आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। अनुर्कन या आकारों के साथ प्रयोग तभी आकर्षक हो पायेगा जब हमें आकारों की वास्तविक सरंचना का ज्ञान होगा। प्रायोगिक कार्य विद्यार्थी के अभ्यास एवं सृजनक्षमता का प्रतिबिम्ब होता है। विद्यार्थियों को रेखांकन, वस्तुचित्रण व चित्र संयोजन से युक्त सत्रीय कार्य का पोर्टफोलियो तैयार करना चाहिए।

चित्र संयोजन

चित्र संयोजन (राजस्थानी लघुचित्र शैली आधारित)

चित्र संयोजन (लोक कला आधारित)

चित्र संयोजन (यामिनी राय)

चित्र संयोजन (अमृता शेरगिल)

चित्र संयोजन (असित कुमार)

परिशिष्ट

- प्रमुख कला संग्रहालय
- प्रमुख कला शिक्षण संस्थाएँ
- विशिष्ट परिभाषाएँ
- पारिभाषिक शब्दावलीं

प्रमुख कला संग्रहालय

1. राष्ट्रीय संग्रहालय, जनपथ, नई दिल्ली : देश का सबसे महत्पूर्ण संग्रहालय है। जिसमें सिन्धुघाटी से लेकर अर्वाचीन तक की कलाकृतियाँ विभिन्न विथिकाओं में प्रदर्शित है।
2. राष्ट्रीय आधुनिक कलादीर्घा, जयपुर हाऊस, नई दिल्ली: देश में समासामयिक कला एवं आधुनिक कलाकृतियों का महत्पूर्ण संग्रहालय है। जिसमें कम्पनी शैली, बंगाल स्कूल से लेकर आज तक के कलाकारों की कृतियाँ संग्रहित है।
3. पुरातत्व संग्रहालय, लाल किला, नई दिल्ली
4. प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई : 1905 में इस महत्वपूर्ण संग्रहालय की नीवं रखी गई एवं आज एक विशाल संग्रहालय है।
5. दी इंडियन म्यूजियम : 27, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, कलकत्ता, स्थापना सन् 1875, भरहूत के महत्वपूर्ण शिल्पों के अतिरिक्त कई महत्पूर्ण कृतियाँ संग्रहित।
6. दी विक्टोरिया मेमोरियल म्यूजियम, क्वीन्स वे, कलकत्ता : इस संग्रहालय में भारतीय एवं यूरोपीयन कलाकारों की कृतियाँ संगृहित है।
7. राजकीय संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी, पेंटनरोड़, एग्मोर मद्रास : स्थापना सन् 1909 में, इसमें अमरावती स्तूप के शिल्पखंड प्रर्दशित है। दक्षिण भारतीय कांस्य प्रतिमाओं का महत्पूर्ण संग्रह एवं आधुनिक कलाकारों की कृतियों की अलग आर्ट गैलरी है।
8. दी फोर्ट सेंट जार्ज म्यूजियम, बीच रोड़, चेन्नई।
9. दी केलिको म्यूजियम, शांतिबाग, अहमदाबाद : भारतीय हाथकरघा व बुनाई की कलात्मक सामग्री का महत्वपूर्ण संग्रहालय।
10. बड़ौदा म्यूजियम एण्ड पिक्चर गैलरी, सयाजी पार्क, बड़ौदरा।
11. भारत भवन रूपकंर म्यूजियम, भोपाल : लोककथाओं एवं समसामयिक कलाकृतियों का महत्वपूर्ण संग्रह।
12. उड़ीसा स्टेट म्यूजियम, जयदेव मार्ग, भुवनेश्वर।
13. दी आर्केलोजियम म्यूजियम, ओल्डगोआ, गोआ।
14. आसाम राज्य म्यूजियम, गुहाटी, आसाम।
15. सलारजंग म्यूजियम, हैदाराबाद : पूर्वी एवं पश्चिमी कला

का महत्वपूर्ण संग्रहालय।

16. पुरातत्व संग्रहालय, खुजराहों (मध्यप्रदेश)
17. राजकीय संग्रहालय, संग्रहालय मार्ग, मथुरा, उत्तप्रदेश : कुषाणकालीन मूर्तियों का महत्वपूर्ण संग्रह।
18. राजकीय संग्रहालय, बुद्ध रोड़, पटना।
19. राजा दिनकर केलकर म्यूजियम, पूना
20. तंजोर आर्ट गैलरी, पैलेस बिल्डिंग, तंजोर, तमिलनाडू।
21. राजकीय संग्रहालय, तिरूअनन्तपुरम, केरल।
22. भारत कला भवन, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी : कलामनिषी रायकृष्णदास के निजी प्रयासों से भारतीय कला की श्रेष्ठ कृतियों का संग्रह।

राजस्थान के महत्वपूर्ण कला केन्द्रो एवं शहरों में राजकीय एवं निजी संग्रह जनता के अवलोकनार्थ स्थापित किये गये है।

23. राजकीय संग्रहालय जयपुर, अलवर, कोटा, बीकानेर, उदयपुर, जोधपुर, भरतपुर, महाराणा प्रताप, सवाई माधोसिंह म्यूजियम, जयपुर आदि भी महत्पूर्ण कलाकृतियों की संग्रहालय है।
24. आधुनिक कला संग्रहालय रविन्द्र मंच, जयपुर, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, पश्चिम, सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर, लोक मंडल उदयपुर भी राजस्थान की कला के प्रमुख दर्शनीय है।

प्रमुख कला शिक्षण संस्थाएँ :

1. सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, म.गा.रोड़, बम्बई।
2. कॉलेज ऑफ आर्टस् एण्ड क्राट्स, मद्रास।
3. कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड क्राट्स, कुम्भकोणम, जिला तंजोर, तमिलनाडू।
4. कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड क्राट्स, कलकत्ता जवाहरलाल नेहरू मार्ग।
5. रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, द्वारकानाथ टैगोर लेन, कलकत्ता।
6. कला भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पं. बंगाल।
7. ललितकला संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
8. कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स, टैगोर मार्ग, लखनऊ।
9. ललितकला संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा।
10. सी.एन. कॉलेज ऑफ आर्ट, एलिसब्रिज, अहमदाबाद।
11. नेशनल स्कूल ऑफ डिजाईन, पालड़ी, अहमदाबाद।
12. गोआ कॉलेज ऑफ आर्ट, मीरमार, पणजी, गोआ।
13. दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, तिलक मार्ग, नई दिल्ली।
14. ललित कला संकाय, जामिया मिलिया ईस्लामिया, नई दिल्ली।
15. गवर्मेंट कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट, मसकटेंट, हैदराबाद।
16. कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स, शांतिपुर, गुवाहाटी, आसाम।
17. राजकीय ललितकला महाविद्यालय, विद्यापति मार्ग, पटना।
18. ललित कला महाविद्यालय, सेक्टर–10सी, चंडीगढ़।
19. इंसीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाईन आर्ट, जवाहर नगर, श्रीनगर।
20. इंसीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाईन आर्ट, एक्सचेंज रोड़, जम्मू।
21. कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट, पलयम, तिरूअनन्तपुरम।
22. राजकीय ललित कला संस्थान, सनातन धर्म मन्दिर मार्ग, ग्वालियर।
23. राजकीय ललितकला विश्वविद्यालय, कृष्णपुरा ब्रिज, इन्दौर।
24. दी आई आई एस विश्वविद्यालय, जयपुर।
25. ललितकला संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
26. राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, शिक्षा संकुल, जयपुर।
27. ललित कला संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
28. दृश्य कला संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त देश के अन्य विश्वविद्यालयों में भी चित्रकला विषय सहित स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी संचालित है।

विशिष्ट परिभाषाएँ

(1) अग्रगामी रंगतें
शुद्ध रंग जो अमिश्रित होने के कारण बहुत चमकदार होते हैं और अन्य रंगों से आगे बढ़ते हुए प्रतीत होते हैं। जैसे लाल एवं नारंगी आदि रंग अन्य समस्त रंगों से आगे बढ़ते और शीतल रंग पीछे हटते हुए प्रतीत होते है। मूलतः गर्म रंग ही अग्रगामी होते हैं।

(2) अग्रभूमि
चित्रभूमि का निचला स्थान जो दर्शक को अपने निकट प्रतीत होता है।

(3) अतिप्रकाश
वस्तु का वह भाग जहाँ सर्वाधिक प्रकाश होता है।

(4) अन्तराल
चित्रभूमि का समस्त विस्तार। यह दो प्रकार का होता है – सक्रिय एवं सहायक। सक्रिय अन्तराल मुख्य आकृतियों के समूह से निर्मित होता है और सहायक अन्तराल पृष्ठभूमि से निर्मित होता है।

(5) अंतराल, आकाश, अवकाश **(Space)**
यह सम्पूर्ण त्रिमितीय (Tridimensional) व्याप्ति दर्शाता है।

(6) अभिप्राय
किसी विषय, आकृति अथवा घटना का बारम्बार अंकित किया जाने वाला परम्परागत रूप। जैसे : स्वास्तिक, ताण्डव, योगी, मेडोन्ना, ईसा की सूली आदि।

(7) असम्मात्रा
चित्रसंयोजन में आकृति–रचना को सम्मात्रिक न होने देना। सम्मात्रिकता सो चित्र में जहाँ कृत्रिमता अथवा जड़ता आने की आशंका हो वहाँ सौन्दर्य की दृष्टि से असम्मात्रिक आकृतियों की रचना की जाती है।

(8) अलंकारिक
आकृतियों का वह स्वरूप जिसमें प्राकृतिक रूपों में सूक्ष्मता एवं ज्यामितियता के प्रभाव से सौन्दर्य उत्पन्न किया जाता है।

(9) अनुपात **(Proportion)**
चित्र में भिन्न रंगों, छटाओं, आकारों की लम्बाइ–चौड़ाई व चित्रित वस्तु या प्राणी के भिन्न अंगों के बीच का अनुपात नैसर्गिक रूप की अपेक्षा परम्परा, शैली, कलाकार की व्यक्तिगत अभिरूचि, अभिव्यक्ति की आवश्यकता, सौन्दर्य की कल्पना, फैशन वगैरह बाह्य तत्वों पर ही अकसर निर्भर करता है। ग्रीक कला में आदर्श मानव शरीर की लम्बाई शीर्ष से आठ गुना मानी जाती थी। भारतीय शास्त्रों में देव, मानव, राक्षस वगैरह की आकृतियों के लिए भिन्न अनुपात निर्णित किये हैं। नारी, पुरुष व शिशु के शरीर के अंगों के अनुपात भिन्न होते हैं।

(10) अत्युष्ण रंग **(Hot colour)**
लाल, सेंदूरी एवं तत्सम अतिउत्तेजक रंग।

(11) अग्रभाग **(Foreground)**
चित्रित यथार्थ या आकृति मलक दृश्य का आगे का हिस्सा। वस्तु निरपेक्ष कलाकृति के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग अर्थहीन है।

(12) अभिश्लेषक **(Agglutinant)**
गोंद जैसा पदापर्थ जिसके साथ मिलाने से रंग कागज़ से चिपकता है।

(13) आकार, आकृति
कलाकार व दर्शक की भावनाओं एवं प्रकाश जैसे चंचल बाह्य तत्वों को छोड़कर रचना तत्वों पर आधारित वस्तु की बाह्याकृति व बनावट। आकार वस्तु के अस्तित्व का दर्शक है। वह वस्तुनिष्ठ है।

(14) आकृति
किसी भी माध्यम में उपयुक्त सामग्री द्वारा प्रस्तुत किया गया रूप। मुख्यतः मानवीय, पशु–पक्षी एवं वानस्पतिक जगत के रूपों को ही इस वर्ग में रखा जाता है।

(15) आकृति मूलक
मानवाकृति का आधार लेकर अंकित की जाने वाली कलाकृतियाँ।

(16) आलेखन
ऐसा अंश अथवा खंड (इकाई) जिसकी आवृत्तियों द्वारा चित्र पूर्ण किया जाये।

(17) आर्द्र भित्ति चित्रण
भित्ति चित्रण की वह प्रविधि जिसमें दीवार के गीले पलस्तर पर ही पतले–पतले रंग लगाये जाते हैं जो पलस्तर सूखने के साथ ही पक्के हो जाते है।

(18) आदिम कला **(Primitive art)**
घने जंगलों में आदिम अवस्था में रहकर संघर्षमय जीवन व्यतीत करने वाली मानव जातियों की कला। इसमें प्रागैतिहासिक (Prehistoric) कला के अतिरिक्त उसके पश्चात् वर्तमान काल तक उसी अवस्था में रह रही जातियों की कला आती है। प्रागैतिहासिक काल के आदिम मानवों से आधुनिक काल की आदिम जातियों में काफी परिवर्तन आने से (जैसे कि जाति व्यवस्था, जीवन यापन के नये संसाधन, वस्त्राभूषण, धार्मिक अन्धविश्वास आदि में) प्रागैतिहासिक कला की अपेक्षा विभिन्न प्रदेशों की वर्तमान आदिम कला में अत्यधिक विविधता दिखायी देती है और कुछ तो कलात्मक दृष्टि से बहुत ही उच्च स्तर की है यहाँ तक कि उससे श्रेष्ठ आधुनिक कलाकारों ने भी प्रेरणा पायी है। बुशमन कला, नीग्रो कला, प्रीकोलंबन (प्राक्कोलंबस) कला व ओशियानिक कला विशेष अभ्यसनीय हैं।

(19) ओप
चमकदार तेल या वार्निश माध्यम के प्रयोग से कलाकृति की बढ़ी हुई चमक। इसकी प्रायः तीन पद्धतियां हैं। प्रथम पद्धति में प्रत्येक रंग में अधिक माध्यम का मिश्रण किया जाता है। द्वितीय विधि में चित्र–रचना के उपरान्त अति प्रकाश वाले भागों में स्थानीय हल्के रंग को माध्यम में मिलाकर पुनः लगा देते हैं जिससे वे स्थान बहुत अधिक चमकने लगते हैं। तृतीय विधि में सूख जाने के उपरान्त सम्पूर्ण चित्र पर ही वार्निश अथवा तेल की परत चढ़ा देते हैं जो सूखकर चित्र के ऊपर चमकदार झिल्ली बना देती है।

(20) इण्टेग्लियो
काष्ठ, धातु अथवा लिनोलियम आदि की आकृतियां खोदकर या छीलकर स्याही लगाकर कागज पर छापना।

(21) इम्पेस्टो
पर्याप्त गाढ़े तैल अथवा टेम्परा रंगों से चित्रण करना। इस प्रकार के चित्रों का प्रयोग तूलिका एवं चाकू से किया जा सकता है।

(22) उच्च कलाएँ
दृश्य कलाओं में से चित्र, मूर्ति एवं वास्तु कलाओं को उच्च माना जाता है। काशीदाकारी, आभूषण, पात्र, खिलौनों एवं बुनाई को निम्न कलाओं में रखा जाता है।

(23) उपयोगी कलाएँ
वे कलाएँ जिनका प्रधान लक्ष्य उपयोग रहता है जैसे बढ़ईगिरी आदि। इन्हें प्रायः निम्न कलाएँ भी कहा जाता है।

(24) उपवर्ण
तृतीय श्रेणी के रंग जो प्राथमिक एवं द्वितीय श्रेणी के मिश्रित वर्णों के मिश्रण से निर्मित किये जाते हैं।

(25) उष्ण वर्ण
लाल तथा नारंगी रंग जो अग्रगामी भी कहे जाते हैं। इनके सहयोग से बनने वाले कत्थई तथा उन्नावी रंग भी इसी वर्ग में आते हैं।

(26) एकवर्णी रंग योजना
एक ही वर्ण के विभिन्न बलों से चित्र पूर्ण करना। विभिन्न बल निर्मत करने के हेतु श्वेत एवं काले रंग का मिश्रण किया जाता है।

(27) एम्बॉसिंग **(Embossing)**
उभारदार चित्र या नक्काशी जो धरातल को पीछे से दबाकर या उत्कीर्ण कर बनायी जाती है।

(28) एक्शन पेन्टिंग
चित्र भूमि पर रंग छिड़कनें, फेंकने, टपकाने अथवा बहा देने से जो अमूर्त प्रभाव उत्पन्न होते हैं। उन्हें अंत में संयोजन की दृष्टि से कुछ सुधार दिया जाता है। इस पद्धति का प्रमुख प्रयोक्ता अमेरिकी चित्रकार जैकसन पौलौक था।

(29) एकाश्मक **(Monolith)**
एक ही पत्थर को उकेरकर बनाया शिल्प या वास्तु– उदाहरणार्थ एलोरा का कैलाश मंदिर।

(30) ऐकेडमिक पद्धति
किसी देश की प्राचीन एवं शैक्षणिक दृष्टि से मान्य परम्पराओं के आधार पर चित्रांकन करना। इस पद्धति में कलाकार अपनी इच्छानुसार कोई परिवर्तन नहीं कर सकता अतः इसमें मौलिकता नहीं होती।

(31) कला
कुशलतापूर्वक किया गया कोई भी कार्य कला कहा जाता है किन्तु सीमित अर्थ में शिवत्व की उपलब्धि के लिए सत्य की सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति ही कला है।

(32) कला—ललित एवं उपयोगी
जिनमें सौंदर्य अथवा अभिव्यंजना का उद्देश्य प्रमुख रहता है उन्हें ललित कलाएँ कहते हैं। जिनमें उपयोगिता का ध्यान रखा जाता है उन्हें उपयोगी कलाएँ कहा जाता है। उपयोगी कलाओं को ही प्रायः शिल्प भी कहा जाता हैं किन्तु शिल्प वस्तुतः कलाकृति की रचना से सम्बन्धित पक्ष है जो ललित कलाओं में भी है और उपयोगी कलाओं में भी है।

(33) कला—दृश्य तथा श्रव्य
दृष्टि से सम्बन्धित कलाओं को दृश्य एवं कानों से सम्बन्धित कलाओं को श्रव्य कहा जाता है। चित्र, मूर्ति वास्तु आदि दृश्य कलाएँ और कविता, संगीत आदि श्रव्य कलाएँ है। दृश्य कलाओं को स्थानाश्रित एवं श्रव्य कलाओं को समयाश्रित भी कहा जाता है।

(34) कांच—चित्रण
कांच पर चित्रांकन पर दरवाजों अथवा खिड़कियों में लगा देते हैं। इसके हेतु विशेष प्रकार के रंग अलग बनाये जाते हैं। विभिन्न रंगों के कांच के टुकड़े सादा काँच के ऊपर चिपका कर भी इस प्रकार के चित्र अथवा आलेखन बनाये जाते हैं।

(35) क्षितिज रेखा
चित्र भूमि की सभी आकृतियों की रंखाएँ यदि बढ़ा दी जाये तो वे क्षितिज रेखा पर जाकर मिल जाती है। इसे दृष्टि तल भी कहते हैं। चित्र की आकृतियों के समस्त तल इस रेखा के समानान्तर, ऊपर या नीचे होते हैं।

(36) क्षितिज **(Horizon)**
वह वृत्ताकार रेखा जहाँ गुरुत्वाकर्षण की दिशा के अभिलम्ब समतल भूमि द्वारा आकाशीय गोल को काटने का आभास होता है।

(37) क्षैतिज रेखा **(Horizontal line)**
क्षितिज के किन्हीं दो बिन्दुओं को जोड़ने वाली या उसी के समानान्तर रेखा।

(38) खनिज वर्ण
मिट्टी, पत्थर आदि पदार्थों से निर्मित रंग जैसे गेरू, खड़िया, रामरज, हिरोंजी आदि।

(39) गढ़नशीलता
कलाकृति में उभार तथा गहराई के प्रयोग से त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करने की विधि। इससे वस्तु में घनत्व की सृष्टि होती है।

(40) ग्राफिक कलाएँ
वे कला रूप जिनमें पहले किसी सतह पर उल्टा चित्र अंकित किया जाता है। फिर उस पर स्याही लगाकर सीधा छापा जाता है। इसके हेतु प्रायः पत्थर, काष्ठ, लिनोलियम एवं धातु की प्लेट की सतह का प्रयोग किया जाता है।

(41) गेसो **(Gesso)**
टेम्पेरा पद्धति के चित्रण से पहले उचित धरातल बनाने के लिए प्लास्टर या चॉक जैसे सफेद चूर्ण व सरेस या केसीन जैसे बन्धक के घेल को मिश्रित करके तैयार किया लेप। इसका उपयोग मूर्ति, उभारदार शिल्प या चित्र के चौखटे बनाने के लिए भी किया जाता है। प्राचीन काल में इसका प्रयोग तैलचित्रण में कैनवास का धरातल बनाने के लिए भी किया जाता था। किन्तु इससे कुछ समय बाद चित्र पर दरारें आती हैं।

(42) घनत्व
किसी वस्तु अथवा आकृति का त्रिआयामी स्वरूप।

(43) चित्रवल्लरी **(Frieze)**
वास्तु पर चित्रित या तक्षित आलंकारिक माला।

(44) छाया—प्रकाश
रंग के हल्के—गहरे बलों अथवा श्वेत—काले के प्रयोग से आकृतियों के प्रकाशित एवं अंधेरे वाले भागों का चित्रण।

(45) छींट, बातिक **(Batik or Battik)**
कपड़े पर आलंकारिक आकृति या चित्र बनाने की एक विधि। इस विधि में प्रथम कपड़े पर पिघले हुए मोम से आकृति बनायी जाती है। शेष हिस्से को लाख के रंगों से रंजित करने के पश्चात् मोम को हटाया जाता है।

(46) छटा, तान **(Tone)**
किसी भी रंग का हल्का या गहरापन।

(47) ज्यामितिक रूप
ज्यामिति में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख आकृतियों – घन, बेलन, शंकु एवं पिंड – पर आधारित रूप।

(48) टेम्पेरा रंग **(Tempera colour)**
आजकल अपारदर्शी जलरंगों को भी टेम्पेरा रंग कहते हैं किन्तु पहले अण्डे की जरदी मिलाए रंगों को टेम्पेरा

कहते थे।

(49) टेम्पेरा चित्रण **(Tempera painting)**
रंगद्रव्य को अण्डे की जरदी जैसे एल्ब्युमिनयुक्त या कोलायडीय (Colloidal) पदार्थ व पानी में मिलाकर चित्रण करने की विधि।

(50) तटस्थ रंग
श्वेत तथा काले वर्ण ये वस्तुओं के छाया–प्रकाश को प्रदर्शित करते हैं।

(51) तान
वस्तु पर छाया अथवा प्रकाश की मात्रा। इसे रंगों के विभिन्न बल अथवा मान प्रदर्शित करते हैं।

(52) निर्वर्ण रंग–योजना
ऐसी रंग योजना जिसमें रंग–हीनता के समान अनुभूति हो जैसे कत्थई, बादामी, काला।

(53) पच्चीकारी **(Mosaic)**
रंगीन पत्थर, कांच या मार्बल के टुकड़ों को मसाले में बिठाकर बनाया गया अलंकरण या चित्र। प्राचीन मिस्र व मेसोपोटामिया में छोटे पैमाने पर इस पद्धति से अलंकरण किया जाता था। बिजांटाइन साम्राज्य में जस्टिनियन के शासनकाल में सर्वोत्कृष्ट दर्जे के बड़े आकारों के व चमकीले पच्चीकारी चित्र बनाये गये। अब इसका महत्व और बढ़ गया है व मार्बल के अतिक्ति नवीन आविष्कृत सामग्री का उपयोग करके दीवारों व फर्श पर पच्चीकारी की जाती है।

(54) पूरक वर्ण **(Complementary colours)**
1. वर्णक्रम (spectrum) के ऐसे दो रंग जिनके मिश्रण से श्वेत (प्रायः श्वेत) रंग बन जाता है; उदाहरणार्थ लाल व हरा, पीला व जामूनी, नीला व नारंगी। 2. लाल, पीला व नीला इन तीन मूल रंगों में से किन्हीं दो रंगों के मिश्रण से प्राप्त द्वितीय (secondary) रंग शेष तीसरे रंग का पूरक वर्ण होता है।

(55) पायस **(Emulsion)**
तैलीय पदार्थ का अन्य द्रव में घोल। पायसीकरण के लिए अण्डा, अल्ब्युमेन, केसीन या मोम को साथ में मिलाना पड़ता है।

(56) पोत, बुनावट **(Texture)**
कलाकृति की सतह का स्पर्शग्राह्य गुण।

(57) पुंज
रंग अथवा छाया–प्रकाश से निर्मित सीमा–रेखा–विहीन क्षेत्र।

(58) पृष्ठभूमि
(1) चित्रतल का वह भाग जो प्रायः क्षितिज तथा आकश से सम्बन्धित रहता है।
(2) किसी चित्र में मुख्य आकृतियों के पीछे अंकित वातावरण अथवा दृश्य।

(59) फिक्सेटिव
चित्र बन जाने पर स्प्रे किया जाना वाला घोल। यह प्रायः पेस्टल द्वारा निर्मित चित्रों पर छिड़का जाता है। इससे रंग स्थायी हो जाते हैं।

(60) फ्रेस्को, भित्ति चित्र **(Fresco)**
योरोप में फ्रेस्को चित्रण मुख्यतः दो विधियों से किया जाता रहा है। प्रथम विधि में पलस्तर की हुई सूखी दीवार पर जलरंगों से चित्रण किया जाता है जिसे फ्रेस्को सेक्को (Fresco secco) कहते हैं। इससे बनाये चित्र न स्थायी रहते हैं और न उनमें रंगों की एकसी चमक होती है। दूसरी दूसरी विधि में गीले पलस्तर पर जलरंगों में काम किया जाता है। इस विधि के रंग पक्के हो जाते हैं व पलस्तर को हटाये बिना चित्र को मिटाया नहीं जा सकता। इस विधि को फ्रेस्को ब्वान (Fresco buon) कहते हैं। इस विधि का प्रयोग इटली में लगभग 14वीं से 16वीं सदी तक हुआ। इस विधि में साधारण पलस्तर पर विशेष आरित्चोतो पलस्तर (Arricciato) चढ़ाया जाता है जिस पर चित्र का रेखांकन उतारा जाता है। अब इसके ऊपर फिर उतने हिस्से पर पुनः पलतर चढ़ाया जाता है जितने पर एक दिन में चित्रण हो सके। इसे इन्तोनाको (Intonaco) कहते हैं। इस तरह विभिन्न हिस्सों में कार्य करके भित्तिचित्र पूरा किया जाता है। भित्तिचित्रण की भारतीय विधियाँ विविध प्रकार की हैं।

(61) बाध्य पदार्थ
वह पदार्थ जो रंगों के चूर्ण के कणों को बाँधने के हेतु मिलाया जाता है। जैसे तेल, गोंद या सरेस।

(62) बिन्दुवर्तना
छोटे–छोटे बिन्दुओं के द्वारा छाया–प्रकाश देना अथवा रंग भरना।

(63) ब्लूम **(Bloom)**
पुराने वार्निश किये हुए तैलचित्र पर निकलने वाली धुंधली हल्की नीली परत, इसको Bluing भी कहते हैं।

(64) भूमि
चित्र का वह स्थान अथवा क्षेत्र जिस पर चित्र की रचना की जाती है।

(65) भूरंग **(Earth colours)**
कुछ खनिज रंग मिट्टी के रूप में मिलते हैं। इनको भूरंग कहते हैं– उदाहरणार्थ ओकर्स, अम्बर्स, स्टोन ग्रीन, टेरा वर्ट, वान डाइक ब्राउन, वेनिशियन रेड (Ochres, Umbers, Stone Green, Terre Verte, Vandyke, Brown, Venetian Red)

(66) भित्तिचित्र **(Mural painting)**
दीवार पर बनाया भित्तिचित्र या पट या फलक पर बनाके दीवार को स्थायी रूप से जोड़ दिया चित्र। भित्ति चित्रण के प्रमुख माध्यम हैं फ्रेस्को, टेम्पेरा, तैल रंग, पच्चीकारी व रंगीन कांच चित्र (Stained glass)।

(67) मान
किसी भी रंग का छाया अथवा प्रकाश के विचार से गहरा या हल्कापन। इसे तानका मान भी कहते हैं।

(68) मणिकुट्टिकम
भित्ति अथवा भूमि पर रंगीन पत्थर एवं काँच के टुकड़ों द्वारा बनाये गये चित्र अथवा अभिकल्प (डिजाइन)।

(69) मध्य तान
किसी भी वर्ण का वह बल जो काले तथा श्वेत के मय बल अर्थात भूरे बल के अनुरूप हो।

(70) मध्यभूमि
चित्र भूमि का मध्य भाग। इस पर प्रायः चित्र की प्रमुख आकृतियां स्थित रहती है। इसके पीछे पृष्ठभूमि एवं नीचे अग्रभूमि कहलाती है।

(71) माध्यम
वह तरल पदार्थ जिसमें रंग घोल कर चित्रांकन किया जाता है। इसे रंग का वाहन भी कहते है। जल, तैल, टेम्परा एवं शुष्क – ये प्रमुख माध्यम हैं।

(72) मिश्रित वर्ण
वे वर्ण जो प्राथमिक वर्णों के मिश्रण से बनते हैं।

(73) रूप
भोग्य सामग्री को काट–छाँट के साथ प्रस्तुत करने से निश्चित क्षेत्रों में विभाजित चित्र–भूमि।

(74) रेखा
निकट अथवा दूर अंकित बिन्दुओं के मध्य गति और निरन्तरता का आभास।

(75) रेखांकन
चित्रण की एक प्रविधि जिसमें केवल रेखाओं के द्वारा ही आकृति रचना की जाती है।

(76) रेखा वर्तना
छोटी–छोटी समान्तर रेखाओं के द्वारा आकृतियों में छाया अंकन। परस्पर काटती हुई रेखाओं का अंकन कहा जाता है।

(77) रेखा **(Line)**
वस्तुतः ज्यामितीय सिद्धान्तों के अनुसार रेखा दो निकटवती समतलों के बीच की सीमा का आभास मात्र है जिसका भौतिक अस्तित्व नहीं होता। किन्तु कला की परिभाषा में इस आभास को स्पष्ट रूप देने के उद्देश्य से जो गहरे रंग का बारीक अंकन किया जाता है उसे रेखा कहते हैं। आकारों को स्पष्टतया देने के लिए इस तरह का रेखांकन करना पड़ता है।

(78) रूपंकर कलाएँ, लचीली कलाएँ **(Plastic arts)**
Plastic शब्द का प्रयोग मूलतः गढ़कर बनायी कलाकृति के लिए किया जाता है जो उकेरकर (Carved) बनायी कलाकृति के ठीक विपरीत है।

(79) ललित कलाएँ **(Fine arts)**
ऐसी कलाएँ जिनके द्वारा कलाकार को अपनी स्वतंत्र प्रतिभा से सर्जनात्मक कृति निर्माण करने का अवसर मिले जैसेकि चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य, नाटक, साहित्य।

(80) लय, ताल **(Rhythm)**
कला का एक महत्वपूण्र मूल तत्व जो कलाकृति के भिन्न अंगों को स्वाभाविक गतित्व में बांधकर उसे एकत्व प्रदान करता है जिससे दर्शक कलाकृति के भिन्न अंगों का बिना रूकावट क्रमबद्ध सौन्दर्यग्रहण कर कलात्मक अनुभूति प्राप्त कर लेता है। लय साधने के लिए कलाकार को आकार, रेखा, रंग, छटा वगैरह कला के सभी मूलाधारों का कुशलतापूर्ण प्रयोग करना आवश्यक होता है– केवल गतिपूर्ण रेखाओं से इसकी कार्यसिद्धि

नहीं।

(81) लोक चित्रण
सामान्य जन–जीवन का चित्रण जो धार्मिक विषयों से पृथक हो।

(82) लोक कला **(Folk art)**
साधारण लोगों द्वारा निर्मित परम्परागत चली आयी कला। इसमें धार्मिक एवं पुराने रिवाज, सौन्दर्य की परम्परागत कल्पना व उपयुक्तता को महत्व होता है व नवीनता या सर्जनशीलता का विचार नहीं होता।

(83) वर्ण **(Hue)**
रंग की वह विशेषता जिसके कारण उसे वर्णक्रम में (spectrum) अपना स्थान दिया जाता है और अन्य रंगों से पृथक् पहचाना जाता है।

(84) वर्ण गुण
वर्ण के तीन गुण हैं – (1) रंगत (2) बल अथवा मान तथा (3) सघनता।

(85) वर्ण एकता
किसी चित्र में वर्ण वृत्त के अनुसार लगाये गये निकटवर्ती उष्ण अथवा शीतल रंगों की योजना जैसे नारंगी–लाल–बैंगनी।

(86) वर्णिका
किसी चित्र में प्रयुक्त रंगों का विशेष समूह।

(87) वर्ण वृत्त
उष्ण तथा शीतल छः रंगों का चक्र एवं ओस्टवाल्ड का आठ रंगों का चक्र।

(88) वस्तुचित्रण **(Still-life painting)**
इसमें निर्जीव वस्तुओं का चित्रण किया जाता है। प्राचीन काल में वस्तुचित्रण करने का किसी को ख्याल नहीं आया। पाम्पेई के उत्खननों व रोम के भित्तिचित्रों में कुछ वस्तु चित्र मिले हैं किन्तु उसके पश्चात् 17वीं सदी तक वस्तुचित्रण अज्ञात ही रहा। कारवाद्ज्यों ने 16वीं सदी के अन्त में एक फलों का वस्तुचित्र बनाया। 17वीं सदी की डच कला से वस्तुचित्रण का विकास शुरू हुआ व फ्रेंच कलाकार शार्दं वस्तुचित्रण के पहले ख्यातनाम चित्रकार बने।

(89) वयन
कलाकृति में प्रयुक्त सामग्री से उत्पन्न होने वाला धरातलीय प्रभाव। यह चिकना अथवा खुरदरा आदि अनेक प्रकार का हो सकता है। इसकी रचना के तीन स्रोत हैं–प्राप्त, अनुकृत एवं मौलिक।

(90) वातावरणीय प्रभाव
स्थान, ऋतु, समय अथवा भावना के अनुसार चित्र में रंगों तथा छाया–प्रकाश की योजना।

(91) वायवीयता
छाया–प्रकाश एवं गढ़न शीलता के अभाव से आकृतियों में उत्पन्न होने वाला हल्कापन।

(92) वाश
चित्रतल पर रंग की पतली–पतली सतह लगाना। जब यह स्थानीय रूप से लगाया जाता है तो इसे स्थानीय वाश कहते हैं और जब सम्पूर्ण चित्र पर लगाया जाता है तो इसे सम्पूर्ण वाश कहते हैं।

(93) व्यापारिक कला **(Commercial art)**
वाणिज्य, प्रकाशन, प्रचार, संचार जैसे व्यापारिक क्षेत्रों में उपयुक्त कला जैसे कि विज्ञापन, व्यंग्यचित्र, पुस्तक–चित्रण, अक्षर–लेखन, पोस्टर आदि।

(94) शीतल वर्ण
वे वर्ण जो शीतलता का प्रभाव उत्पन्न करते हैं। जैसे नीला और हरा।

(95) श्वेतमिश्रित रंग **(Gouache)**
सफेद रंग मिला के गाढ़ा किये हुए रंग में चित्रण। इसके लिए कभी रंगीन कागज का भी धरातल के रूप में उपयोग किया जाता है।

(96) संयोजन **(Composition)**
कला के विभिन्न अंगों (रेखा, रंग, आकार, अवकाश, बुनावट आदि) की इस तरह रचना करना कि निर्मित कृति एकरूपता, सुसंगति, संतुलन व प्रभावोत्पादकता के गुणों से परिपूर्ण हो।

(97) सुवर्ण अवच्छेद, स्वर्णिम अनुपात **(Golden section)**
यह अनुपात प्राप्त करने के लिए रेखा को इस तरह विभाजित किया जाता है कि उसके बड़े हिस्से का छोटे हिस्से से अनुपात समूची रेखा के बड़े हिस्से से अनुपात के बराबर हो। यह अनुपात लगभग 5/8 होता है। यह अनुपात जहाँ कहीं भी प्रयुक्त हो अक्सर आदर्श माना गया है। वोल्तेर ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि ''हाथ से निर्मित कलाओं में भी अदृश्य ज्यामिति होती है।''

स्वर्णिम अनुपात को प्रथम सूत्रबद्ध करने का श्रेय विट्रुवियस को जाता है जिस पर पुनरुत्थान काल में ल्युका पाचिओली ने अधिक संशोधन करके उसे दिव्य अनुपात (Divine proportion) नाम से प्रकाशित किया जिसके लिए लिओनार्दो ने रेखा–लेख बनाये थे। ८

(98) सतह, पृष्ठ, धरातल, तल **(Surface)**
यह क्षेत्रदर्शक है व उसकी केवल लम्बाई व चौड़ाई होती है, मोटाई नहीं होती।

(99) सम्मिति, सममिति **(Symmetry)**
आकृति या रचना की मध्यवर्ती रेखा या समतल की दोनों ओर समरूपता।

(100) सुसंगति **(Harmony)**
रेखाओं, रंगों, क्षेत्रों आदि कला के मूलाधारों का चित्र में आन्तरिक एवं अन्य मूलाधारों से सामंजस्य।

(101) स्टेन्सिल, क्षेपांकन आकृति **(Stencil)**
कागज जैसे पतले समतलीय पृष्ठ को काटकर छापने हेतु बनायी आकृति या चित्र।

(102) स्वर्णानुपात
यूनानियों द्वारा विकसित अनुपात जिससे सौन्दर्यानुभूति में सहायता मिलती है। इस क्रम 2 : 3 : 5 : 8 : 13 : 21 : आदि है।

(103) स्थिरीकरण **(Fixing)**
चॉक, पेंसिल, कार्बन या पेस्टल जैसे अस्थिर माध्यमों में बनाये चित्रों को कागज पर उचित द्रव का छिड़काव करके स्थिर करना।

परिभाषिक शब्दावली

अर्द्धचित्र - Relief
अधखुली आँख - Halfclosed eyes
अर्ध मूर्ति (अर्ध प्रतिमा) - Bust
अर्धछटा - Half-tone
अक्षर कला - Calligraphy, Lettering
अंकन - Drawing
अंग - Limb, Canon
अकादमी - Academy
अश्ममुद्रण - Lithography, Surface printing
अमूर्त - Abstract
अमूर्त - Abstract
अमल–लेखन - Aquatint, Etching
अधिष्ठापन - Installation
अक्षिपटल - Retina
अभिधा - Denotation
अभियोजन - Adjustment
अभिप्राय - Motif
अभिज्ञान - Recognition
अभिव्यंजना - Expression
अभिव्यक्ति - Expression
अभिवृत्ति - Attitude
अतियाथार्थवाद - Surrealism
अतिन्द्रिय - Transcendental
अतिवाद - Extremism
अन्विति - Unity
अभ्यास - Practice, Training
अभ्यास चित्र - Sketch
अपकर्ष - Anticlimax
अपरिष्कृत - Coarse
अपारदर्शी - Opaque
अज्ञेय तत्व - Noumenon
असंगति - Anamoly
असमिमतीय - Asymmetrical
अस्तर - Primer, Priming
अवधारणा - Concept
अवबोधन - Perception
अवकाश - Space
अचेतन - Unconscious
अचल - Region
अन्वंकन - Rendering
अनुरूप - Analogous
अनुकृति - Copy
अनुकरण - Imitation
अनुचित्रित मुद्रण - Offset printing
अनुभव - Experience
अनुपात - Proportion
अनुरेखण - Tracing
अनुदर्शी (प्रदर्शनी) - Restropective (exhibition)
अन्तराल - Space
अन्तर्ज्ञान - Sixth-sense, Intution
अग्रभाग - Foreground
अलंकृत शैली - Decorative -Style
अलंकरण - Decoration
अलकार - Rhetor
अश्लील - Obscene
अलौकिक - Imaginative, Supersensus
आधुनिक कला - Modern art
आयाम - Dimension
आघात - Accent
आख्यान - Fable
आद्यबिम्ब - Archetype
आकृति - Figure, Shape, Form
आकृति उत्कीर्णन - Intaglio
आकृतिमूलक - Figurative
आकार - Size
आकाशीय दूरदृश्यलघुता - Aerial perspective
आदिरूप - Prototype
आदिम - Primitive
आदिम कला - Primitive art
आहार्य - Ariculate, Acquired
आभास - Semblence, Appearance
आरोपण - Projection
आरेख - Diagram
आरेखण - Drawing
आदर्श - Model, Ideal
आदर्शवाद - Idealism
आवक्ष मूर्ति - Bust
आवर्तन - Repetition
आवेग - Impulse
आफसेट मुद्रण - Offset printing
आत्म स्वीकृति - Confession
आत्म–चित्र - Self-portrait
औचित्य - Propriety, Decorum
आनन्द - Delight

आलंकारिक - Ornamental
आलंकारिक रचना - Pattern
आलमबन - Plumb line
इम्पेस्टो - Impasto
इन्द्रियवाद - Sensualism
इच्छा - Desire
उभार - Relief
उपमा - Simile
उद्दीपक - Stimulus
उपाख्यान - Episode
उद्भावना - Ideation
उदात्त - Lofty, Sublime
उत्खनन - Engraved
उत्कीर्ण - Engraved
उत्कीर्णन - Engraving, carving
उत्तरोत्तर क्रम - Successive order
उज्जवल - Bright
ऊष्ण रंग - Warm colour
ऊर्ध्व - Vertical
एकाकी - Solitary
एकाश्म - Monolith
एकवर्णी - Monochromatic
एकवर्णी चित्रण - Monochromatic painting
ऐन्द्र - Sensuous
ओप - Glaze, Patina
ओप - Overcoat, polish
कर्णवत् - Diagonal
कठोर किनार चित्रण - Hard-edge painting
कथानक रूढ़ि - Motif
कल्पित - Imaginary
काष्ठ कर्तन - Wood cut
कांच चित्रण - Glass painting
काम - Pleasure
कौशल - Craftsmanship, Virtuosity
कोशल - Skill
कौतूहल - Interest, Eagerness
कोलाज - Collage
काल - Time, Period
काल दोष - Anachronism
कसौदी - Criterion
कुण्डली–चित्र - Scroll
कुट्टी - Papier mache
कैनवास - Canvas
कलम - Bursh, Style of painting
कलम - School
कल्पना - Imagination
कला - Art
कला शैली - School
कला वीथी - Art gallery
कला–तत्व - Art of the art's sake
कलाकार - Artist
कलापारखी - Connoiseus
क्रेयान - Crayon
खड़िया - Chalk
खनिज रंग - MIneral colour
खाका - Lay out
खड़ी रेखा - Vertical line
गति - Movement, Motion
गतिशील - Dyanamic
गीताम्क - Lyrical
गो मूत्रिका - Meander
गोदना - Tattooing
ग्वाश - Gouache
गच - Stucco
गुफा चित्र - Cave art, cave painting
घनत्व - Solidity, Volume
चमत्कार - Amazement
चारू - Lovely
चारण - Bard
चेहरा - Face, mask
चेतन - Conscious
चेतना - Sentience
चित्र - Picture, Painting
चित्रण चाकू - Painting Knife
चित्रकला - Art of Painting
चित्रारोपण - Montage
चित्रोपम - Picturesque
चित्रवल्लरी - Frieze
चित्रित - Painted
चित्रित पर्दा - Tapestry
चित्तवृत्ति - Fluctuations of mind
चिह्न - Sign
चिन्तन - Thinking
छींट - Batik
छाया - Shade
छाया प्रकाश चित्रण - Chiaroscuro
छायाचित्र - Silhoutte
छाप चित्र - Print
जटिलता - Complication
जनसंचार माध्यम - Mass-media
जनजाति चिन्ह - Totem
ज्यामितिक - Geometric

ज्यामितीय आकार - Geometric form
टेम्पेरा रंग - Tempera colour
ठंडे रंग - Cool colours
ठप्पा - Block
ठप्पा - Seal
डाय - Dye
ड्राय पाइंट - Dry-point
ढांचा - Armature, Cradling
ढालना - Casting
तृतीय रंग - Tertiary colours
तंत्र कला - Tantra art
ताम्र - Copper
तारपीन - Turpentine
तादात्म्य - Empathy
तोरण - Arch
तान - Tone
ताल - Head, Cannon of Proportion
ताल - Rhythm
तेल चित्रण - Oil painting
तेल रंगीय छाप चित्र - Oleograph
तनाव - Tension
तूलिका - Brush
तूलिकाघात - Bursh stroke
तिपायी - Easel
थंका - Thunka
दरबारी कला - Court art
दशा - Condition
दस्तकारी - Handicraft
दूरी - Distance
दूरदृश्यलघुता - Perspective
दृश्य - Visible, Scene
दृश्य कलाएँ - Visual arts
दृष्टि - Vision, Sight
दृष्टि रेखा - Eye-level, Eye-line
दृष्टिजन्य मिश्रण - Optical mixture
दिव्यानन्द - Ecstacy
द्विमितीय - Two dimensional
द्विवर्णिक - Dichromatic
द्वितीय रंग - Secondary colours
धब्बांकन - Patch work
धड़ प्रतिमा - Torso
नीति निरपेक्ष - Amoral
नेत्रीय - Optical
नैतिक - Moral
नैसंर्गिक - Innate, Natural
नन्दतिक - Aesthetic
नटराज - Nataraja
नगन–मूर्ति - Nude
नग्न–चित्र - Nude
निष्ठा - Sincerity
निष्कर्ष - Empitome
निष्पादन - Execution
निरूपण - Portrayal
नियम - Rule, Canon of proportion
नियमन - Control
निजिता (रंग की) मान - Hue
पर्यावरण - Environment, Milieu
पर्यवेक्षक - Observer
परिष्कार - Polish, Refinement
परिकल्पना - Design, Disegno
परिमाण - Quantity
परिप्रेक्ष्य - Perspective
पवित्र प्रतिमा या मूर्ति - Icon
पहेली - Riddle, Maze
पर निरपेक्ष - Exclusive
परम्परागत कला - Traditional art
परत पद्धति रंगांकन वाश - Wash painting
पाषाण युग - Stone age
पाण्डुलिपि - Manuscript
पात्र - Character, Pot
पार्श्व - Side
पार्श्व दृष्टि - Side View, Profile
पोस्टर रंग - Poster colour
पोत - Texture
पच्चीकारी - Mosaic
पुराण कथा - Myth
पुरातन - Archaic
पुरालेख - Epigraph
पुनरावृत्ति - Repetition
पट–पत्री, कुण्डलित पट - Scroll
पूर्णरूप - Prototype
पूरण - Filling
पूर्वाभास - Foreshadow
पूर्वापर क्रम - Preceding Order
पलस्तर - Plaster
प्रक्षेपण - Projection
प्रकृति चित्रण - Landscape painting
प्रकृत - Naivite
प्रकार - Genre, Kind
प्रमाण - Size
प्रविधि - Technique
प्रतिमा - Image

प्रतिमा (मूर्ति) - Statue
प्रतिबिम्ब - Image, Reflection
प्रतिक्रिया - Reaction
प्रतिनिधित्व - Representation
प्रतिभा - Talent
प्रतिपादक - Exponent
प्रतिस्थापना - Antithesis
प्रतिच्छाया - Shadow
प्रभाविता - Dominance
प्रभाववाद - Impressionism
प्रशंसा - Praise
प्रौढ़ता - Maturity
प्रागैतिहासिक कला - Prehistoric art
प्रसंग संकेत - Alusion
प्रस्तुति - Representation
प्रत्यय - Idea
प्रतीक - Symbol
फलक - Panel, Paper-board
फूलकारी - Diaper
फ्रेस्को - Fresco
बहुदेववाद - Polytheism
बहुवर्णीय - Polychromatic
बहुआयामी - Multi dimensional
बोध - Perception
बुनकारी - Textile art
बुनावट–पोत - Texture
बल - Value, Emphasis
बिम्ब - Image, Model
भंगिमा - Pose
भाव - Emotion, Mood
भावना - Feeling
भूदृश्य - Land Scape
भित्ति चित्र - Fresco, Mural painting
मृण्मूर्ति - Terra cotta
महराब - Arch
मान - Value
मानसिक - Mental, Intellectual Rational
मानवचित्रण - Life Painting
मुलम्मा करना, ओप - Gilding
मनोविकार - Emotion
मनोहर - Seductive
मनोदृष्टि - Attitude
मूर्त - Concretem Formal, Morphological
मूल रंग - Primary colours
मूल्य - Value
मूलभाव (अभिप्राय) - Motif
मिथ्याभास - Hallucination
मूलप्रवृत्ति - Instinct
यथार्थवाद - Realism
युक्ति - Skill
रंजक - Painter
रंग–विधान - Colour scheme
रंगत - Hue
रसिक - Critic
रीति - Manner
रोमांच - Thrill
रस - Aesthetic Delight
रसास्वादन - Appreciation
रसानुभव - Aesthetic experience
रचना - Creation
रत्यात्मक कला - Erotic art
रेखीय परिप्रेक्ष्य - Linear perspective
रेखा - Line
रेखांकन - Drawing
रूप - Form
रूपंकर कलाएँ - Plastic arts
रूपान्तर - Adaptation, Transformation
रूपवाद - Formalism
लय - Rhythm, Melody
लघुचित्र - Miniature painting (work of art)
लघुतम कला - Minimal art
लक्षण - Attribute, Sign, Symbol
ललित - Fine
ललित कल्पना - Fancy
ललित कलाएँ - Fine arts (French-Beaux arts)
लाइनो कट - Lino cut
लालित्य - Grace
लावण्य - Charm
लोक कला - Folk art
लोककला - Folk Art
लोकोत्तर - Supersensous
लोपी बिन्दु - Vanishing point
वर्ण - Chrome, Hue
वर्ण नियोजन - Descriptive art
वर्ण चक्र - Chromatic circle, colour circle
वर्ण तीव्रता - Intensity of colour
वर्णहीन - Achromatic
वर्णक्रम - Spectrum
व्यंग्य - Sugestive
व्यक्ति चित्रण - Life, Life drawing
व्यवहार - Behavior
वयन - Texture

वर्णिक - Chromatic
वर्णिका भंग - Brushing
वर्तिका - Brush
वर्तिका - Pencil, Crayon, Pastel
वारनिश - Varnish
वास्तविक - Actual, Real
वास्तु कला (वास्तु विद्या, स्थापत्य) - Architecture, Architectonics
वास्तुकार - Architect
वातावरणीय परिप्रेक्ष्य - Aerial perspective
वस्तुचित्रण - Still-life painting
वस्तुनिष्ठ - Objective
वस्तुनिरपेक्ष कला - Abstract art
वर्तना - Shading
वेदी - Altar
विषयवस्तु - Content
विकृतिकरण - Distoration
विकास - Development
विरोध - Contrast
विज्ञापन - Advertisement
विस्तरण - Elaboration
विस्तार - Extension
विश्वसनीय - Believable
विट्रुवियन आकृति - Vitruvian figure
शबीह - Portrait
शरीर रचना विज्ञान - Anatomy
शास्त्रीय - Classical
शैक्षणिक - Academic
शैली - School, Style
शैली - Style, Diction
श्वेत मिश्रित रंग - Gouache
शिष्ठता - Decorum
शिल्प - Craft
शिल्पकारिता - Craftsmanship
शिलाचित्र - Rock painting
शिलालेख - Epigraph
सद्य - Instantly
संयोजन - Composition
संयोग - Accident
संरचना - Structure
संवाहन - Conduction
संवेदन - Sensation
संवेदनशील - Sensitive
संगति - Consistency
संग्रहालय - Museum
सम्प्रदाय - School
सम्प्रेक्षण - Communication
समाधि - Concentration
समाधि गुफाएँ - Catacombs
स्मारकीय - Monumental
समन्वय - Synthesis
सम्मिति - Symmetry
सहयोग - Unity
सहज - Spontaneous, Naive
सक्रान्ति - Transition
सुवर्ण अवच्छेद - Goldern section
सुन्दर - Beautiful
सत्य - Face
सतही मुद्रण - Surface printing
सत्याभास - Verisimilitude
सज्जा कला - Decorative art
सर्जनशीलता - Creativity
सूक्ष्म - Abstract, Mycoroscopi
सृजनात्मक - Creative
स्थायीभाव - Sertimert, Pemianert mood
स्थापित कला - Academic art
स्वर्णिम अनुपात - Golden section
स्फ्यूमातो (इटा.) - Sfumato
स्वप्न - Fantacy
स्वचलता या स्वयंचालितता - Automaticism
स्तम्भ - Pillar
स्तर - Layer, Standard
स्तूप - Stupa
साधारणीकरण - Generalisation
सामंजस्य - Concordance, Harmony
सादृश्य - Similitude
सौम्यरूप - Idyll
सौन्दर्य - Beauty
सौन्दर्यशास्त्र - Aesthetics
सिद्धान्त - Principle
स्थिति - Situation
स्थिर - Static
हरण - Plagiarism
हस्तलिपि कला - Chirography
शृंगारिक - Erotic
शृंगार - Erotice
क्षैतिज - Horizontal
क्षेपांकन–आकृति - Stencil drawing, stencil
क्षितिज रेखा - Horizontal line